“चला जाणुया नदीला“ कार्यक्रम

महाराष्ट्र सरकार ने जल बिरादरी के नदी परिक्रमा कार्यक्रम में पूरे मन से हाथ आगे बढ़ाया है। जल बिरादरी अपने साथियों के साथ पिछले 3 सालों से “आओ नदी को जाने” कार्यक्रम चला रही थी।

अब “चला जाणुया नदीला“ कार्यक्रम के तहत हम लोग भारत में अमृत महोत्सव मनाने के लिए “नदियों में अमृत बहे“ इस दिशा में नदियों के साथ लोगों का दिल - दिमाग जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर, मुझसे कहा कि, आपके अमृत महोत्सव में जो नदियों का कार्यक्रम है, उसमें हम भी आपके साथ हैं। इसके बाद महाराष्ट्र सरकार के उपमुख्यमंत्री, संस्कृति व वन मंत्री और राजस्व मंत्री और कई मंत्रियों ने मिलकर इस काम को आगे बढ़ाने के लिए जल बिरादरी को दिल खोलकर समर्थन दिया है।

जल बिरादरी कभी किसी से भी आर्थिक मदद के लिए हाथ नही फैलाती, इसलिए इस काम के लिए भी कोई आर्थिक मदद सरकार से नहीं ली है। ना आर्थिक मदद लेने का कोई विचार है, लेकिन यह राज - समाज का साझा कार्यक्रम है। इस साझा कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार ने जिस तरह से दिल खोलकर कार्यक्रम का समर्थन किया और इस कार्यक्रम को अपना कार्यक्रम बनाया इसके लिए हम महाराष्ट्र सरकार का अभिनंदन करते हैं।

हमने महाराष्ट्र की जनता से अपील की है कि, वह इस नदियों के कार्यक्रम में अपने दिल दिमाग से जुड़ कर आगे आएं। महाराष्ट्र राज्य के बहुत सारे नदी प्रेमियों, जल प्रेमियों, जल नायकों, जल युद्धयो, जल दूतों, जल सेवकों और जलकर्मियों ने इस नदी के काम में अपना हाथ आगे बढ़ाया है ।

अब यह जल बिरादरी की जिम्मेदारी है कि, जिस तरह से अपना “आओ नदी जाने कार्यक्रम“ चला रही थी। अब उससे बड़ी जिम्मेदारी जलबिरादारी पर आ गई है। जल बिरादरी के

साथियों को अब ज्यादा दूसरे लोगों का सम्मान करते हुए, अनुशासित तरीके से जिसमें सरकार और समाज का भी बराबरी से सम्मान हो, वैसा कार्यक्रम चलाने की जरूरत है। जब समाज, राज का सम्मान करता है और तो राज भी संवेदनाओ को समझकर, उसके कामों का समर्थन करता है ।

आप जानते हैं कि, जल बिरादरी भारत और दुनिया भर में नदी, पानी, मिट्टी और भूजल पुनर्भरण के लिए ही केवल काम करती है। जहां की सरकारें और समाज जल बिरादरी के इस काम को समझते हैं, वह सरकारें व समाज जल बिरादरी को बुलाता है और फिर जल बिरादरी उनके पास जाकर, उनके काम को अपना काम मानकर, उनके कामों में मदद करती है। ठीक ऐसी ही घटना है जब महाराष्ट्र सरकार ने "चला जाणुया नदीला" कार्यक्रम को अपना कार्यक्रम बनाया। सरकार ने इस दिशा में विधिवत दो जी आर निकाले। महाराष्ट्र सरकार कार्यक्रम में अपनी तरफ से समझने , समझाने और नदी को सहेजने में सहयोग करने के लिए आगे आयी है। अब जलबिरादरी का भी यह दायित्व बनता है कि, सरकार के सहयोग का सम्मान करें। यह सरकार का आर्थिक सहयोग नहीं है, यह सरकार का नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और प्रशासनिक सहयोग है। महाराष्ट्र सरकार जनता की सरकार है इसलिए महाराष्ट्र की जनता की नदियों को शुद्ध - सदानीरा बनाने के लिए पहली बार यह सरकार आगे आई है।

इस घटना से जल बिरादरी को यह विश्वास हुआ है कि, जब ऐसे कामों में जो सरकार आगे आती हैं, तो वह सरकारें ज्यादा संवेदनशील, समझदार और सम्माननीय होती है। इसलिए महाराष्ट्र सरकार, भारत के दूसरे राज्यों के मुकाबले अधिक सम्माननीय हैं। 21वीं शताब्दी की सबसे बड़ी चुनौती नदियों का मरना - सूखना, भूजल का खाली होना, बाढ़-सुखाड़ का बढ़ना है। इससे बचने वाले कार्यक्रम बनाना, महाराष्ट्र सरकार के लिए गौरव की बात है।

जल बिरादरी के जो साथी जल संरक्षण करके, नदियों के पुनर्जीवन के कामों में महाराष्ट्र में पिछले 15 - 20 सालों से लगे हुए थे, उनके परिणाम अब धरती पर दिखते हैं। जैसे - अग्रणी नदी, महाकाली, राम नदी और कासाल गंगा।

महाराष्ट्र के जल बिरादरी के साथियों से मेरा खास आग्रह है कि, वह "चला जाणुया नदीला" कार्यक्रम को सरकारी कार्यक्रम ना माने, यह एक गैर सरकारी, असरकारी कार्यक्रम है। इसको अपना असरकारी कार्यक्रम मानकर, सरकार के काम में मदद करें। आप बिना सरकारी आर्थिक मदद के, सरकार को सहयोग करने की भावना से, बिना किसी लालच व स्वार्थ के साधना का साधन मानकर, साध्य की तरफ आगे बढ़े। हमारा साध्य है कि, महाराष्ट्र की नदियां, भारत की नदियां और दुनिया की नदियां अमृत्वाहिनी बने। इस बड़े साध्य के लिए हमें साधना करने की जरूरत होती है, इसलिए इस कार्यक्रम को साधना मानकर, साध्य पाने की इच्छा से अनुशासित होकर जुटे।

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह

15-10-2022